Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

जीवन दर्शन में संत कबीर के मूल्य परक सिद्धान्त

Banita

Assistant Professor Music (Vocal), Govt College Dhaliara, Kangra

सार संक्षेपिका

भारत की पुण्य भूमि पर कई संत महात्मा अवतरित हुए हैं। यहां की संत परंम्परा में कबीर जी एक महान संत, कवि, विचारक, आलोचक एवं समाज सुधारक हुए। इन्होंने अपनी वाणी से समाज में चेतना एवं ज्ञान का प्रचार किया। इन्होंने अपनी वाणी से समाज में फैली हर बुराई पर व्यंग्य प्रहार किया। इनकी ये वाणी वर्तमान में भी मनुष्य को नैतिक मूल्यों एवं कर्तव्यों का पालन करने के साथ समाज में एकता एवं अखण्डता की शिक्षा देती है। इनके ये अमूल्य विचार मनुष्य को पवित्र एवं आदर्श जीवन जीने का संदेश देते हैं। कबीर की वाणी वर्तमान में भी जीवन के हर पहलू में सार्थक सिद्ध हो रही है। इन्होंने अपनी वाणी से सम्पूर्ण मानव जाति के मस्तिष्क एवं हृदय में एक अमिट छाप छोड़ी है।

बीज शब्दः कबीर, नैतिक मूल्य, कबीर वाणी।

भूमिका

भारतीय संत परंम्परा में कबीर जी एक महान संत हुए। इन्होंने अपने जीवन में बहुत सी विषम परिस्थितियों का सामना किया। इनके समय में समाज कई कुरीतियों से भरा था। समाज में अंधविश्वास, पाखण्ड, जातिगत भेदभाव जैसी कई बुराइयां फैली थी। समाज कई वर्णों में बंटा था। इसी समाज में जीते हुए कबीर जी ने अपनी वाणी से जन–जन को जागरूक किया। कबीर जी की वाणी मुख्यतः तीन रूपों में मिलती है साखी, शब्दी/पद, रमैणी। साखी से अभिप्राय साक्षी है। कबीर जी अपने जीवन काल में जिन परिस्थितियों के साक्षी बने उनका वर्णन किया है। साखियों के कई अंग हैं जैसे– गूरूदेव, सुमिरन, बिरह, ग्यान, रस, मन, माया, संगति, साध, कामी नर, भेष, सहज, काल, बीनती, बेली आदि। इन्हीं अंगों में सम्पूर्ण जीवन के हर पहलू का सार है। कबीर जी ने अपनी वाणी से सम्पूर्ण मानव जाति को अध्यात्म एवं जीवन मूल्यों का संदेश दिया। उन्होंने अपनी वाणी में नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों को जीवन में उतारने का संदेश दिया। आज भी इनकी वाणी को भारत वर्ष ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। कबीर जी की वाणी में कई मूल्यों का समावेश है।

उदेश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उदेश्य कबीर वाणी में उपस्थित नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का वर्तमान मनुष्य, समाज में उपयोगिता को दर्शाना है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक पद्धति के साथ व्याख्यात्मक पद्धति के प्रयोग से कबीर जी द्वारा स्थापित जीवन मूल्यों का वर्णन किया गया है। इन मूल्यों की वर्तमान में उपयोगिता का विस्तृत वर्णन किया गया है।

आध्यात्मिक मूल्य

अध्यात्म यानि आत्मा एवं परमात्मा से सम्बन्धित। कबीर जी ने निंगुण एवं निराकार राम की भक्ति पर बल दिया। उनकी वाणी में अनेक आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश है। जैसे–

भक्ति

कबीर जी ने निंगुण, निराकार भक्ति को अपनाते हुए कहा हैः

जब लग नाता जगत का तब लग भक्ति ना होय।

नाता तौड़ै हरि भजै भक्त कहावे सोय।।

कबीर जी ने कहा है कि हे मनुष्य जब तक तू जगत के झूठे रिश्ते नातों में उलझा रहेगा तब तक भक्ति के महत्व को नहीं समझ पायेगा। ना हीं सच्ची भक्ति के लिए समय निकाल पायेगा। सच्चा भक्त वही है जो संसार के झूठे बन्धनों को छोड़कर हरि की भक्ति करता है।

सतगुरू

सतगुरू यानि ऐसा गुरू जो जीने की सच्ची राह दिखाए। सच्चा गुरू अपने शिष्य को इस काबिल बनाता है कि वह जीवन की हर परीक्षा में सफल हो। गुरू की अपार महिमा को दर्शाते हुए कबीर जी की कई साखियां मिलती हैं जैसे–

गुरू गोविंद दोउ खड़े काके लागूं पाय।

बलिहारी गुरू आपने गोविंद दियो बताय।।

सतगुरू की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।

लोचन अनंत उघाडिया, अनंत दिखावणहार।।

सतसंग

सतसंग से अभिर्पाय संतों की संगत से है। ऐसी संगति जो सत्य मार्ग का उपदेश दे। सतसंगति ही जीवन में अच्छा फल देती है। बुराई का अंत बुरा ही होता है। सतसंगति को अपनाने का उपदेश देते हुए कबीर जी ने कहा है–

कबीरा मन पंछी भया, भावे तहवां जाय।

जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।

सर्वव्यापकता

ईश्वर की सर्वव्यापकता को दर्शाते हुए कबीर जी कहते हैं कि ईश्वर सर्वज्ञानी एवं सर्वव्यापक है। वह सृष्टि के कण–कण में विराजमान है। उसे कहीं भी ढूंढने की आवश्यकता नहीं है वह हर मनुष्य के हृदय में वास करता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढै बन मांहि।

ऐसे घटि घटि राम है, दुनियां देखे नाहिं।।

मानवीय मूल्य

कबीर जी ने सम्पूर्ण प्राणी जगत को जीने की सच्ची राह दिखाई है। उन्होंने अपने विचारों से मनुष्य को जीवन में मानवता या मनुष्यता के जो नैतिक मूल्य हैं उनका पालन करने का उपदेश दिया है। इन उपदेशों को अपने जीवन में आत्मसात कर विषय–विकारों से मुक्त हो सके। कबीर जी ने सकारात्मक गुणों को अपनाने तथा अवगुणों को त्यागने का संदेश दिया है। सकारात्मक गुणों के अन्तर्गत जो मूल्य आते हैं उन पर कबीर जी ने अपने विचार दिए हैं।

सत्य

सत्य मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण मूल्य है। कबीर जी ने सत्य के महत्व को बताते हुए कहा है कि सत्य के बराबर कोई तपस्या नहीं हो सकती और झूठ के समान पाप। जिस मनुष्य के मन में सत्य होता है उसके मन में स्वयं भगवान निवास करते हैं।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदे सांच है, ताके हिरदे आप।।

प्रेम

प्रेम मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। प्रेम एक सुखमयी एहसास है। इसकी महता को समझाते हुए कबीर जी कहते हैं– प्रेम अमूल्य है ये ना तो खेत में उगता है ना ही दुकान में बिकता है। कोई चाहे राजा हो या प्रजा प्रेम आत्म बलिदान से ही प्राप्त होता है। ये एक एहसास है जो खरीदा–बेचा नहीं जा सकता।

प्रेम ना बाड़ी उपजै, प्रेम ना हाट बिकाय।

राजा परजा जोही रूचै,सीस देइ लै जाय।।

क्षमा, दया

क्षमा और दया के महत्व को बताते हुए कहा है कि जहां दया, क्षमा का भाव है वहीं धर्म और ईश्वर का वास होता है। जहां लोभ और क्रोध आदि विकार होते हैं वहां पाप के साथ काल रहता है। ये दोनों ही भाव मनुष्य में होना आवश्यक है।

जहां दया तहं धर्म है, जहां लोभ तहं पाप।

जहां क्रोध महं काल है, जहां छिमा तहं आप।।

संतोष

संतोष यानि संतुष्टि की भावना। जिस व्यक्ति के मन में यह संतुष्टि है कि जो भी उसके पास वह पर्याप्त है वह हमेशा प्रसन्न रहता है। कबीर जी कहते हैं–

माँगन गये सो मरि रहे, मरे सो मांगन जाहिं।

तिनसे पहले वे मरे, होत कहत जो नाहिं।।

धैर्य

धैर्य यानि विपरीत परिस्थितियों में भी संयम बनाए रखने का गुण। मनुष्य में धैर्यता का गुण होना बहुत आवश्यक है। कबीर जी कहते हैं–

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।

माली सींचै सौ घड़ा,ऋतु आये फल होय।।

विवेक

विवेक का अर्थ है सही गलत की परख। जिस मनुष्य में विवेकशीलता का गुण होता है वह जीवन की किसी भी परीक्षा में पराजित नहीं होता। कबीर जी कहते हैं–

समझा समझा एक है, अन समझा सब एक।

समझा कोई जानिए, जाके हिरदे विवेक।।

इन मानवीय गुणों के साथ कुछ अवगुण भी हैं जिन्हें त्यागने का संदेश दिया है जैसे–

अहंकार

कबीर जी ने अहंकार को मनुष्य जीवन का विकार बताते हुए कहा है कि स्वयं पर अभिमान तथा प्रशंसा का मोह एक कुत्ते के समान है उससे स्नेह जताएं तो वह चाटने लगता है और अगर उसे दुतकारें तो काटने को आता है।

मान बड़ाई जगत में, कूकर की पहिचानि।

मीत किए मुख चाटही, बैर किए तन हानि।।

काम, क्रोध, लोभ

इन तीनों विकारों से दूरी रखने का संदेश देते हुए कबीर जी कहते हैं जिन मनुष्य के अंदर ये तीनों विकार हैं वह कभी भी सच्ची राह पर नहीं चल सकता, ना भक्ति मार्ग को अपना सकता है।

कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति ना होय।

भक्ति करे कोई सूरमा,जाति वरन कुल खोय।।

मोह

कबीर जी ने मोह के बंधन को विकार बताते हुए कहा–

मोह फंद सब फँादिया, कोई न सकै निखार।

कोई साधू जन पारखी, विरला तत्व विचार।।

माया

कबीर जी ने माया को जीवन का एक ऐसा विकार बताया है जो मनुष्य को शक्कर की तरह मीठी तो लगती है परन्तु ज्ञान के बिना यह विनाश की ओर ले जाती है।

कबीर माया मोहिनी, जैसी मीठी खाँड।
सतगुरू कृपा भई,नहीं तो करती भाँड।।

निंद्या

निंद्या के कबीर जी ने दो पहलू बताएं हैं– एक सकारात्मक जिसमें निंदक के कारण मनुष्य अपने व्यक्तित्व को निखार पाता है, दूसरा नकारात्मक जो कि किसी की निंद्या एवं बुराई करना एक नैतिक अवगुण है। कबीर जी कहते हैं–

निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटि बंधाइ।
बिन साबण पाँणी बिना, निरमल करै सुभाए।।
जे को नींदे साथ कूँ,संकटि आवै सोइ।
नरक माँहिं जामैं मरैं, मुकति न कबहूँ होइ।।

आशा, तृष्णा

मनुष्य के अन्य विकारों की तरह आशा,तृष्णा भी ऐसे विकार हैं जो कभी समाप्त नहीं होते। मनुष्य कुछ ना कुछ और पाने की चाह में जीवन मरण के बंधनों से कभी भी नहीं निकल पाता है। इनको त्यागने का उपदेश देते हुए कबीर जी कहते हैं–

माया मुई न मन मुवा, मरि मरि गया शरीर।
आसा तृष्णा न मुई, यौं कहि गया दास कबीर।।

सामाजिक मूल्य

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए समाज के हर नियम का पालन करना उसका कर्तव्य है। सामाजिक मूल्य मानव के विकास का आधार है। इन्हीं का पालन करके समाज में संतुलन स्थापित किया जा सकता है। इसी उद्देश्य से कबीर जी ने समाज में फैली कुरीतियों पर व्यंग्य प्रहार करते हुए जन मानस को जागरूक किया।

एकेश्वरवाद

एकेश्वरवाद की भावना को दर्शाते हुए कबीर जी कहते हैं–

वही महादेव वही मुहम्मद,ब्रह्मा आदम कहिए।
कोई हिन्दू कोई तुरूक कहावैं, एक जमीं पर रहिए।।

अंधविश्वास

अंधविश्वास जैसी समाजिक कुरीति को झूठा आडम्बर बताते हुए कबीर जी कहते हैं–

तंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरयो जग कोय।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

सार शब्द जाने बिना, कागा हंस न होय।।

जातिगत भेदभाव

समाज में फैली जाति–पाती, ऊँच–नीच जैसी बुराइयों को देखते हुए कबीर जी ने कहा–

जो तुम ब्राभन बंभनी जाए।
और राह तुम काहे न आए।।

मिथ्या आडम्बर

कबीर जी ने ढोंगी साधुओं के दिखावे तथा वेशभूषा को मात्र मिथ्या आडम्बर बताते हुए कहा है–

का माला मुद्रा के पहिरे,चंदन घिसे लीलारा।
मुँड मुडाए जटा रखाए, अंग लगाए छारा।।

निष्कर्ष

कबीर जी की वाणी जीवन मूल्यों से भरपूर है। ये मानव मूल्य मनुष्य को पवित्र एवं आदर्श जीवन जीने के साथ नैतिकता एवं सद्भावना का संदेश देते हैं। आधुनिकता की दौड़ में जहां मनुष्य अपने मूल्यों को भूलता जा रहा है। उसे चेताने में कबीर जी की वाणी सहायक सिद्ध हुई है। कबीर जी ने कहा है कि मनुष्य के रूप में जन्म लेना एक वरदान है इसे यूँ ही बर्बाद नहीं करना चाहिए। अपने मन को सद्गुण रूपी अलंकारों से सजाना चाहिए एवं अवगुणों का त्याग करना चाहिए।

मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारंबार।
तरवर थैं फल झड़ि पड़या, बहुरि न लागै डार।।

संदर्भ

1 अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, कबीर वचनावली,पृ. 77
2 भगवत स्वरूप मिश्र, कबीर ग्रन्थावली,पृ.4
3 अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, कबीर वचनावली,पृ. 73
4 श्यामसुंदर दास, कबीर ग्रन्थावली,पृ.112
5 अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, कबीर वचनावली,पृ. 97
6 श्यामसुंदर दास, कबीर ग्रन्थावली,पृ.49
7 अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, कबीर वचनावली,पृ. 104
8 अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, कबीर वचनावली,पृ. 105
9 श्यामसुंदर दास, कबीर ग्रन्थावली,पृ. 73
10 अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, कबीर वचनावली,पृ. 111
11 भगवत स्वरूप मिश्र, कबीर ग्रन्थावली,पृ.56

संदर्भ ग्रंथ सूची

दास, श्यामसुंदर (2010) कबीर ग्रन्थावली, लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद।
मिश्र, भगवत स्वरूप (2008) कबीर ग्रन्थावली, अग्रवाल पब्लिकेशंस आगरा।
हरिऔध, अयोध्यासिंह उपाध्याय (2011) कबीर वचनावली, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली।